PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-25 VOLUME-4 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

4

सम्पादक
ॉ. सुनील जाधव

कनीकी सम्पादक
निल जाधव

ाचार हेतु कार्यालयीन पता -
.सुनील जाधव,
हाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
नुमान गढ़ कमान के सामने,
देड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

ISSUE-25 VOL-4 IMPACT- IIJIF-7.312 ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर,2

अनुक्रमणिका

1.''रिपोर्टर के तनाव का लेखाजोखा''(निर्मल वर्मा के 'रात का रिपोर्टर' के उपन्यास के विशेष संदर्भ में)–*प्रोफेसर बेवले ए. जे....*

2.कोरोना काल में दुग्ध व्यवसाय: एक विश्लेषण–*अरविन्द कुमार*..

3.आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद का स्वरूप–*डॉ0 आनन्द कुमार मिश्रा*..

4.श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी एवं लैंगिक असमानता–*उमेश कुमार शाक्य*..

5.'रामकथा में रावण का चरित्र–विकास' (रामायणं, रामचरितमानस एवं रावण (लघु काव्य) के विशेष संदर्भ में)–*डॉ. हेमवती शर्मा*.

6.आचार्य अभिनवगुप्त का 'नाट्य–सिद्धान्त'–*चन्द्र किशोर शास्त्री*..

7.माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर शैक्षणिक गतिविधियों का प्रभाव–*सोनी देवी*..........

8.मिथिलेश्वर कृत–'तेरा संगी कोई नहीं' : एक अध्ययन–*डॉ0 सियाराम*..

9.नव्या जगाचा शोध घेणारी कथा : सृजनसकाळ–*प्रा.डॉ.व्यंकटी पावडे*..

10.लक्ष्मीकांत वर्मा की कविताओं में लघुमानव के अस्तित्व की तलाश –*देवेन्द्र कुमार*..

11.पं0 तेजराम शर्मा के साहित्य में सामाजिक चेतना–*सुदामा प्रसाद*..

12.मुक्तिबोध : काव्य के सामाजिक सरोकार–*प्रवीन कुमार*..

13.अंगारी चेतना का कवि मुक्तिबोध (अँधेरे में के संदर्भ में)–*डॉ.ओम प्रकाश सैनी*..

14. जीवन यथार्थ : प्रकृति, स्वरुप एवं विकास–*डॉ.विनोद गहलोत*..

15.वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण–*डा0 वन्दना सक्सेना*..

16.राजेन्द्र अवस्थी के उपन्यासों में आँचलिकता–*निलेश के पटेल*..

17.सुकवि किंकर और कृष्णदेव प्रसाद गौण का तुलनात्मक छायावाद –*अंशुल कुमार सिंह*..

18.कबीर के काव्य पर बुद्ध का प्रभाव–*प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले*..

19.हिन्दी : वर्तमान परिदृश्य–परिप्रेक्ष्य–*डॉ0 प्रतिमा सिंह*..

21.पत्रकारिता : दशा और दिशा–*कौशिका शर्मा*..

22.भोजपुरी भाषा की उत्पत्ति, विकास और उसका रचनात्मक अवदान –*डॉ.मनोज कुमार*..

23.सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी–*डॉ.मुदस्सिर अहमद भट्ट*..

4.'अस्तित्व' उपन्यास में किन्नर अस्तित्व–*डॉ.सब्ज़ार अहमद बट्ट*..

5.सुषम बेदी की कहानी 'कितने कितने अतीत' में संवेदना –*डॉ.अमृता सिंह*..

18.कबीर के काव्य पर बुद्ध का प्रभाव

-प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड, जि.परभणी

परिचय: मध्ययुगीन संत कवियों, समाज सुधारकों में कबीर का अनन्य साधारण, महत्वपूर्ण स्थान है। उनके जन्म संबंधी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। कबीर के काव्य में मिले अंत: साक्ष्य के आधार पर उनका जन्म 1398 को काशी में हुआ ऐसा माना जाता है। वहाँ के परिवेश में प्रचलित जनश्रृति के अनुसार उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के कोख से हुआ ऐसा कहा जाता है। लोक लज्जावश उन्होंने अपने नवजात शिशु को 'लहर' नामक तालाब के पास छोड़ दिया था। वहां से 'नीरु' और 'नीमा' जुलाहा नवदम्पति गुजर रहे थे। उन्होंने इस बालक को अपने साथ घर ले आए और उसका लालन–पालन किया।उनकी पत्नी का नाम 'लोई' था। उन्हें 'कमाल' और 'कमाली' नामक दो संताने थी। कपडे बुनना और बेचना उनके का व्यवसाय था। किंतु बचपन से ही कबीर का मन व्यवसाय में नही रमता था। उन्हें साधुओं की संगति करना, विद्रवतजनों से चर्चा करना, कविताएँ करना और उसे यार दोस्तों के साथ बैठकर गाने में बड़ी अभिरुचि थी। वे व्यवहार ज्ञान से आत्मज्ञानी बने। उन्होंने किसी पाठशाला में पढ़ाई नहीं की हैं। वे अपढ, निरक्षर थें। वें स्वयं कहते हैं, 'मसि किगज छुओ नही, कलम गहि नही हाथ।' उनके गुरु का नाम कोई 'शेख तकी' तो कोई 'स्वामी रामानंद' बताते हैं।

कबीर अपने समय के प्रखर क्रांतिकारी, संत कवि, दार्शनिक, सत्यान्वेषी, समाज सुधारक, धर्म निरपेक्ष, लोक कल्याणकारी समाज व्यवस्था के चिंतक, आलोचक थें। उनका काव्य आज भी प्रासंगिक है। साथ–ही–साथ कालातीत है। कबीर अक्कड़ और फक्कड विद्रोही कवि थें। उनकी ठेठ, खिचड़ी सधुक्कडी भाषा को खड़ी बोली के नाम से भी अभिहित किया जाता है। धर्म और साहित्य के क्षेत्र में वे नव–जनक्रांति के जनक थें। सामाजिक क्रांति के पुरोधा थें। विद्रतजनों से विचार–विमर्श तथा जीवन की पाठशाला से उन्होंने ज्ञानार्जन किया। कबीर ने समकालीन समय में घोर अज्ञान, अंधविश्वास, धार्मिक आडंबर, कर्मकांड, पशुहिंसा, अज्ञान, जातीयता, सामाजिक विषमता और धर्म के नाम पर सामान्य जनता का किया जाने वाला शोषण आदि का कड़ा विरोध एवं उस पर अपने काव्य के माध्यम से कडी–से–कडी टिका–टिप्पणी की है। समकालीन समय में भी निम्न बातें हमें समाज में दिखाई देती हैं। अत: कबीर आज भी प्रासंगिक हैं। ऐसा हम निर्विवाद रूप से कह सकते हैं। कबीर वाणी के डिटेक्टर थें। वे भाषा संबंधी कहते है– "चार कोस बदले पानी। आठ कोस बदले वाणी।।" ऐसे महान निर्गुण संत कवि कबीर का देहावसान काशी के पास 'मगहर' मे 1518 मे हुआ। कबीर ने मरते दम तक भारतीय

समाज में प्रचलित झूठी मान्यताओं का कड़ा विरोध किया। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय 'काशी' में बिताया किंतु मृत्यु समय नज़दीक आने पर वे 'मगहर' में जाकर रहने लगें। भारतीयों की यह धारणा है कि, 'काशी' में प्राण त्यागने से मनुष्य को स्वर्ग तथा 'मगहर' मृत्यु होने पर मनुष्य को नरक मिलता है। अत: स्वर्ग–नरक की भ्रामक परिकल्पनाओं का लोगों को डर बताकर उनका शोषण किया जाता हैं। इन सब बातों का कबीर ने मरते दम तक खंडन किया हैं। उनके वचनों को उनके शिष्यों ने संकलित किया। बाद में उसे 'बीजक' शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। जिसे छंद और विषय की दृष्टि से 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी' इन तीन भागों में विभाजित किया जाता है।बुध्द का प्रभाव देखने से पूर्व थें। बचपन से ही उनका मन व्यवसाय में नही रमता था। वे साधुओं की सतसंगति और व्यवहार ज्ञान से आत्मज्ञानी बने। उनके गुरु का नाम कोई 'शेख तकी' तो कोई 'स्वामी रामानंद' बताते हैं।

कबीर अपने समय के प्रखर क्रांतिकारी, संत कवि, दार्शनिक, सत्यान्वेषी, समाज सुधारक, धर्म निरपेक्ष, लोक कल्याणकारी चिंतक, आलोचक थें। उनका काव्य आज भी प्रासंगिक है। साथ–ही–साथ कालातीत है। कबीर अक्कड और फक्कड़ विद्रोही कवि थें। उनकी ठेठ, खिचडी सधुक्कड़ी भाषा को खडीबोली के नाम से भी अभिहित किया जाता हैं। धर्म और साहित्य के क्षेत्र में वे नव जनक्रांति के जनक थें। सतसंग, यात्रियों, विद्रवतजनों से विचार–विमर्श तथा जीवन की पाठशाला से उन्होंने ज्ञानार्जन किया। कबीर ने समकालीन समय में धार्मिक आडंबर, कर्मकांड, पशुहिंसा, अज्ञान, अंधविश्वास, जातीयता, सामाजिक विषमता और धर्म के नाम पर सामान्य जनता का किया जाने वाला शोषण आदि का कडा विरोध एवं उस पर अपने काव्य के माध्यम से कडी–से–कडी टिका–टिप्पणी की है। समकालीन समय मे भी निम्न बातें हमें समाज में दिखाई देती है। अत: कबीर आज भी प्रासंगिक है। ऐसा हम निर्विवाद रूप से कह सकते हैं। कबीर वाणी के डिटेक्टर थें। वे भाषा संबंधी कहते है– "चार कोस बदले पानी। आठ कोस बदले वाणी।।" यही नहीं वे स्वयं अपढ, निरक्षर होने की बात करते है–"मसि कागज़ छुओ नहीं, कलम गह्यो नहीं

था।" ऐसे महान निर्गुण संत कवि कबीर का देहावसान काशी के स 'मगहर' में 1518 में हुआ। कबीर ने मरते दम तक भारतीय माज में प्रचलित झूठी मान्यताओं का कडा विरोध किया। उन्होंने पने जीवन का अधिकांश समय काशी में बिताया किंतु मृत्यु का मय नजदीक आने पर वे 'मगहर' में जाकर रहने लगें। भारतीयों यह धारणा है कि, काशी में प्राण त्यागने से मनुष्य को स्वर्ग लता है। मगहर मृत्यु होने पर मनुष्य को नरक मिलता है।

अतः स्वर्ग–नरक की भ्रामक परिकल्पनाओं लोगों को र बताकर उनका शोषण किया जाता है। इन सब बातों का बीर ने मरते दम तक खंडन किया है। उनके वचनों को शिष्यों संकलित कर उसे 'बीजक' शीर्षक से प्रकाशित किया है। जिसे द और विषय की दृष्टि से 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी' इन तीन गों में विभाजित किया जाता है।कबीर के काव्य पर बुद्ध का भाव देखने से पूर्व हमें बुद्ध द्वारा क्षत्रिय कालामों से किया गया वाद देखनाअत्यंत महत्वपूर्ण है। एक बार बुध्द अपने भिक्षु संघ के साथ चारिका करते हुए कोसल जनपद के 'केसपुत्तिय' नगर जा पहुंचे। यह नगर क्षत्रिय कालामों की बस्ती थी। बुद्ध के आगमन की सूचना मिलते ही वे बुद्ध के पास पहुंचे। उन्होंने बुध्द के सम्मुख प्रश्न उपस्थित किया कि, "हे श्रमण गौतम हमारे गाँव में कुछ श्रमण–ब्राह्मण आते हैं और अपने–अपने मत की स्थापना के लिए एक दूसरे के मत को नीचा दिखाते हैं। अपने मत को ऊँचा उठाने के लिए दूसरे के मत का खंडन करते हैं। और हम संदेह में पड़ जाते हैं कि, कौन सही और कौन गलत?" तब बुद्ध उन्हें समझते हुए कहते हैं, "हे कालामों ! तुम किसी बात को केवल इसलिए मत मानों कि वह तुम्हारे सुनने में आई है, वह परंपरा से प्राप्त हुई है, वह (धर्म) ग्रंथों में लिखी है। वह तर्क(शास्त्र) के अनुसार है, वह न्याय (शास्त्र) के अनुसार है, उपरी तौर पर वह मान्य प्रतीत होती है, वह अनुकूल–विश्वास वा अनुकूल –दृष्टि की है, उपरी तौर पर सच्ची प्रतीत होती है, या वह किसी आदरणीय आचार्य की कही हुई है।"

आगे बुध्द उन्हें सही और गलत को पहचानने की कसौटी बताते हुए कहते हैं, "है कालामों ! तुम अपने आप से प्रश्न करो कि, क्या अमुक बात हितकर है? निंदनीय है? कष्टप्रद और दुखदाई है? तुम्हें यह भी देखना चाहिए कि, क्या वह तृष्णा, घृणा, मूढ़ता और द्वेष की भावना वृद्धि में सहायक तो नहीं होती? किसकी को अपनी इंद्रियों को गुलाम तो नहीं बनाती? वह तुम्हें हिंसा करने में प्रवृत तो नहीं करता ? चोरी करने की प्रेरणा तो नहीं देता ? काम संबंधी मिथ्याचार में प्रवृत्त तो नहीं करता ? झूठ बोलने में प्रवृत्त तो नहीं करता ? अंत में यह पूछना चाहिए कि, यह दुख या अहित के लिए तो नहीं है ?" और अगर इन सभी प्रश्नों के उत्तर सकारात्मक है, तो इन बातों, मतों को अस्वीकार करो। और अगर उत्तर नकारात्मक है, तो स्वीकार करो। और वास्तव में यही बुध्द की बौद्धिक कसौटी के सत्य और असत्य को पहचानने के प्रमापक मानदंड है। बुद्ध के इन विचारों का कबीर के काव्य पर गहरा प्रभाव हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कबीर कहते है,"मै कहता हूँ आखिन देखि, तू कहता कागज की लेखि।मै कहता सुरझावन हारि, तू राख्यौ उरझाई रे।।मै कहता हूँ जागत रहियो, तू जाता है सोई रे।जुगन जुगन समुझावत हारा,कहा न मानत कोई रे।।"

अर्थात् उपरोक्त चौपाई में कबीर पर बुध्द का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस चौपाई में कबीर वेद–पुराणों, ग्रंथों में लिखी बातों पर अविश्वास व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं, मैं अपनी आंखों से देखी बातों पर विश्वास करने को कहता हू। तुम वेद–पुराण ग्रंथों में लिखी बातें कहते हो। मैं हर बात को सुलझाने की कोशिश करता हूं। किंतु तुम उसे उलझा दिया करते हो। मैं जागते रहने की बातें करता हूं। किंतु तुम सो जाते हो। यह बात मैं युगों–युगों से समझाते हार गया किन्तु मेरा कहना कोई भी नहीं मानता है। यही नहीं बुद्ध के पंचशील तत्वों को भी कबीर के दोहों में देखा जा सकता है। बुद्ध का पहला शील है, प्राणी हिंसा नहीं करना चाहिए। किंतु समाज में हम आज भी यह देखते हैं कि, लोग अपनी इच्छा पूर्ति के लिए मनौती मनाते हैं। व्रत–उपवास, पूजा–अर्चा, पत्थर की मूर्ति के आगे पशु–बलि चढाते हैं। इस संबंध में कबीर कहते हैं,"बकरी पाती खात है, ताकि काढी खाल। जो नर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल।।" "दिन में रोजा रखत है, रात हनत है गाय।" अर्थात कबीर ने यहां पशु हिंसा का खुलकर विरोध किया हैं। बुद्ध का दूसरा शील है, "चोरी न करना" इस संबंधी कबीर कहते हैं, "बोलत ही पहिचानिये, साहु चोर को घाट। अंतर की करनी सबै, निकसै मुख की बांट ।।"

मतलब कौन सज्जन है और कौन चोर है, यह उनके बातों से ही पहचान में आते हैं। वह जैसी करनी करता है, वैसी ही बातें उसके मुंह से निकल जाती हैं। बुद्ध तीसरा शील है, "व्यभिचार न करना"। मनुष्य चरित्र से शीलवान होना चाहिए। अर्थात् वह व्यभिचारी न हो। परस्त्री गमन न करें। मूलतः स्त्री को कबीर ने कामीनी के रूप में देखा है। वे कहते हैं, "एक कनक अरु कामीनी, जग में दोऊ फंदा। ता पे जो न चढ़ई, ताका मैं बंदा।।" अर्थात् धन या सोना दोनों एक प्रकार से मनुष्य के गले का फास है।

कुछ और।। नारी की झाई परत अंधा होत भुजंग।कबीरा तिनकी कौन गति, जो नीत नारी के संग।।"शीलवंत सबसे बड़ा, सब रतन की खान।तीन लोक की संपदा, रही शील में आन।।" तात्पर्य यह है कि, सदाचारी, शीलवान, व्यभिचार से मुक्त व्यक्ति सभी पुरुषों में श्रेष्ठ, सभी रत्नों की खान के समान होता हैं। यही नहीं ऐसे मनुष्य का समस्त मानव समाज मेंसबसे ऊंचा स्थान,मान–सम्मान होता है।

बुद्ध का चौथा शील है, 'असत्य न बोलना' झूठ न बोलना। सदा सर्वदा सत्य वचन पर बल देना। चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विपरीत क्यों न हो। इसलिए कबीर कहते हैं,"ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।।" मनुष्य का परिचय या उसका व्यक्तित्व उसके बातों द्वारा प्रकट होता हैं। वह कितना घमंडी, दुराभिमानी या विद्वान, विनयशील है, यह संवाद से विदीत होता हैं। उसकी वानी से सुनने वाले तो सभी संतुष्ट हो ही जाए परन्तु साथ ही साथ उसे भी संतुष्टि या समाधान मिले।उसका भी मन हल्का, शांत, शीतल हो जाएँ। कबीर यह भी कहते हैं,"ऐसी बानी बोलिये,कोई न बोले झूठ। ऐसी जगह बैठिये, कोई न बोले उठ।।" मनुष्य बडा लालची, लोभी, तृष्णा से भरा हुआ,आत्मप्रोढि होता है, इसलिए वह झूठ बोलता हैं। इसी कारण उसके जीवन में दुख निर्माण होता है। आशा, अभिलाषा ही दुःख का मूल कारण होता है, यह बुद्ध का वचन हैं।

बुध्द का पाँचवाँ शील है, 'नशीली चीजों का सेवन न करना'। इस बात पर भी कबीर ने पुरजोर बल दिया है। वे लिखते हैं कि, "भाँग, तम्बाकू, धतूरा, आफूँ और शराब। कौन करेगा बंदगी, ये तो हुए खराब। भाँग भखे बल बुद्धि को, आफूँ अहमक होय। दो अमलन अवगुण कहा, ज्ञानवंत नर जोय।।"वस्तुतः भाँग, तम्बाकू, धतूरा, आफूँ और शराब ये सब चीजें नशीली होती हैं। इन सबके जो व्यक्ति अधिन या व्यसनाधीन होता हैं, उसका जीवन तो नष्ट होता ही है, साथ साथ उसका परिवार भी उससे प्रभावित होता हैं। सभी नशीले पदार्थ मनुष्य के स्वास्थ्य, बल, बुद्धि, सोच–समझ या सुझबुझ को खत्म कर देते हैं। और जो ज्ञानी व्यक्ति है, वह इन चीजों से हमेशा अलिप्त रहता हैं।

निष्कर्षतः संत कबीर के काव्य में बुद्ध के तत्वों, विचारों का प्रभाव